sole motive—import? Or is there any motive of the Government—to get more revenue by importing gold and taxing the same?

PROF. MADHU DANDAVATE: The hon. Member is quite correct. There are two objectives. Firstly, we will be able to augment our foreign exchange reserves by imposing the duty to be paid by the N.R.Is. in foreign exchange. Secondly, as a result of the pressure of gold that will be coming in from the open channels there will be an indirect curb on smuggling. Smuggling can be reduced to that extent and the gold prices can also be reduced.

SHRI N. K. P. SALVE: Sir, after listening to the Finance Minister, I am inclined to think that all that glitters is not gold. Sir, the question is about curbing smuggling. The Finance Minister says that he is going to allow the N.R.Is. to import gold into the country in the form of jewellery on which he will charge duty in foreign exchange. We know well the tremendous attraction which the Indian society in the urban or rural areas has for gold. Perhaps one of the biggest rationale for repeal of the Gold Control Act could have been that at least we have got rid of one of the laws which was wholly against the sentiments and wholly against the traditions which are held dear all over the country for centuries. Therefore, I would like to know from the Finance Minister one thing. The demand is going to be really 200 tonnes. There is no way to meet this demand except by smuggling. If you want to curb smuggling, what is it that prevents you from allowing the N.R.Is. to bring as much primary gold as they like? You can charge duty in foreign exchange. In this way, the primary gold will be available to people. Unless you make gold officially available, I fail to understand how you are thinking of curbing smuggling.

PROF. MADHU DANDAVATE: Sir, when the hon. Member referred to the gold that is likely to come through the N.R.Is., I made it very clear that it will be in the form of jewellery. If we allow them to bring the primary gold....

SHRI N. K. P. SALVE: They will not sell it. It will not meet the demands and the needs of the people.

PROF. MADHU DANDAVATE: Already I have told you that there are two proposals. One is to allow them to bring 200 grams of jewellery and charge the duty in foreign exchange. The second proposal to have a ceiling on bringing gold in the form of jewellery and to permit them to bring some quantity of gold. Both the proposals are there. One quantum will be primary gold and another quantum will be gold in the form of jewellery, say 200 grams per head. As Shri Salve said just now, if that comes in this country, it will be able to reduce smuggling to some extent. I think that will be the best way.

Flood control measures in North Bihar

*103. SHRIMATI KAMLA SINHA: Will the Minister of WATER RESOURCES be pleased to state:

(a) whether it is a fact that at present there is no commitment from Nepal for recording quantum of rainfall and consequent discharge of the rivers flowing from Nepal to North Bihar which cause heavy floods in North Bihar during monsoons;

(b) if so, whether Government have taken up the question of establishing gauge discharge sites in Nepal on these rivers with the Government of Nepal for the establishment of a regular communication link for advance warning so that people of flood-prone North Bihar can be warned in advance; and

(c) if so, with what results?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF WATER RESOURCES (SHRI MANUBHAI KOTADIA): (a) to (c) Nepal and India agreed in December, 1987 to establish an effective flood forecasting and warning system through

exchange of data on reciprocal basis. The necessary equipment will be supplied by India and Nepal will maintain the system in its territory.

श्रीमती कमला सिन्हा : सर्, मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से यह पूछना चाहूंगी कि उन्होंने अभी अपने उत्तर में यह कहा कि 1987 में नेपाल और भारतवर्ष के बीच एक समझौता हुआ कि बाढ़ के पानी को रोकने के लिये रेसिप्रोकॉल बेसिस पर एक वार्निंग सिस्टम बनाया जायेगा । उसके बाद हिमालय की नदियों से बहुत पानी बहा है लेकिन अभी तक कुछ नहीं किया गया है और पूरा बिहार, खासकर उत्तर बिहार बाढ़ के पानी में बहता जा रहा है ।

तो मैं मंत्री महोदय से साफ शब्दों में यह पूछना चाहती हूं कि वे यह काम कब तक करेंगे ? तीन वर्ष तो बीत गये हैं । क्या यह संभव है कि अगली बरसात के पहले यह संयंत्र नेपाल में लगा दिया जायेगा ताकि बाढ़ की खबर उत्तर बिहार को मिले और हम बाढ़ में डूबे नहीं ।

SHRI MANUBHAI KOTADIA: Mr. Chairman, Sir, I fully appreciate the anxiety and the concern expressed by the hon. Member. As she knows, our effort is to establish these flood forecasting centres in Nepalese territory. But it depends upon the cooperation from Nepal. We are trying our best. Untill now we have not received any favourable reply from the Government of Nepal. We will try and we hope that we will be able to convince them, and in the near future we will have something....

श्रीमती कमला सिन्हा : मैं पूछना चाहती हूं कि नेपाल से जल संसाधन मंत्रालय के इस संबंध में कब-कब बात हुई है और क्या बात हुई है ?

श्री मनुभाई कोटाड़िया : सन 1987 के बाद कई दफा मेरे मंत्रालय ने नेपाल को लिखा है और मेरे मंत्रालय ने मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स को भी लिखा है। छः सात दफा हमने खत लिखे हैं। उधर से इसका कोई रिप्लाई मिलता नहीं है । बीच में नेपाल के साथ हमारे रिश्ते अच्छे नहीं रहे उसकी वजह से उधर से जो फेवरेबल रिप्लाई आना चाहिये था नहीं आया । लेकिन मई के महीने के बाद हमने इस बारे में पूरी ताकत लगाई है । मैं सोच रहा हूं कि मैं भी उधर जाकर कुछ बात करूं। Before the next flood season, we will do something.

श्रीमती कमला सिन्हा : मैंने साफ प्रश्न पूछा था कि केन्द्रीय सरकार के जल संसाधन मंत्रालय की नेपाल के साथ इस संबंध में कब-कब और क्या वार्ता हुई है ? मैं मंत्री महोदय से चाहती हूं कि मेरे प्रश्न का साफ-साफ जवाब दें ।

श्री मनुभाई कोटाड़िया : हमने खत लिखे हैं If she wants the dates of letters, then I can give her. For setting up of flood forecasting stations, we have written to Nepal on 13th July, 1989, 27th December, 1989, then on 16th of July, 1990, on 19th of July, 1990, on 3rd of August, 1990, and I also had discussions with the Minister of External Affairs.

श्री चतुरानन मिश्र : सभापति महोदय, बहुत दुख की बात है कि वर्तमान सरकार के आने के बाद इस संबंध में कोई खास प्रयास नहीं हुआ ।

श्री सभापति : मंत्री जी खुद वहां जा रहे हैं ।

श्री चतुरानन मिश्र : मंत्री जी आगे जायेंगे । इन छः महीनों में तो यह सरकार कुंभकरणी निद्रा में सोई रही है । इस कुंभकरणी निद्रा को तोड़ने के लिये मंत्री महोदय के यहां जितने भी बिहार के सांसद हैं, उनकी बैठक हुई थी और सबने उनसे अनुरोध किया था कि इस मामले को नेपाल से लिया

जायें। मैंने व्यक्तिगत रूप से प्रधानमंत्री का पत्र लिखा था कि जब नेपाल के प्रधान मंत्री आयेंगे तो तब इस मामले को टेक अप किया जाय। इस बारे में विदेश मंत्री को भी लिखा था कि इस मामले को टेक अप किया जाय। लेकिन इन लोगों ने इतनी गंभीरता के साथ इस मामले को नहीं लिया। मेरी सूचना के अनुसार हमारे प्रधान मंत्री ने नेपाल के प्रधान मंत्री से इस सम्बंध में चर्चा की थी। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि इस चर्चा के विषय क्या थे? दूसरी बात यह है कि भारत सरकार और नेपाल सरकार के बीच एक समझौता हुआ था कि कुछ नहरें बनाई जायेंगी और कुछ बांध बांधे जायेंगे लेकिन नेपाल की टेरेटरी में भारत सरकार ने वह काम नहीं किया और इसलिये वे लोग नाराज हैं, कहते हैं कि आपने अपने पोरशन में तो बांध बांध लिया लेकिन हमारे इलाके फलड हो गये हैं। इस बिन्दु पर हमारी सरकार ने क्या निर्णय लिया है? तीसरा बिन्दु यह है कि जो नदियां वहां से आती हैं उनमें हाईडल पावर जेनरट करने का उनको अधिकार हैं लेकिन उसका बाजार भारत ही हो सकता है। वे लोग कहते है कि हम प्रति यूनिट 9 पैसे लेंगे, लेकिन भारत सरकार कहती है कि प्रति यूनिट 7 पैसे देंगे। इस दरमियान पिछले सात वर्षों से यह मामला उलझा हुआ है। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहूंगा कि इन तीन बिन्दुओं पर प्रधान मंत्री की बातचीत में क्या हुआ? मैं यह भी जानना चाहता हूं कि जो 40 फोरकास्टिंग स्टेशन्स इस्टेब्लिश होने वाले थे। उनमें नेपाल सरकार कहती है कि आप कुल गुप्त यंत्र रख देंगे उसके बारे में आपने क्या किया है? तीसरा प्रश्न मेरा यह है कि जो आपने बांध बांधना था उसको पूरा क्यों नहीं किया? इन चार बिन्दुओं पर आप जवाब दें।

SHRI MANUBHAI KOTADIA: Sir, the purfort of the main question is very limited. It is, I think, ...

SHRI CHATURANAN MISHRA: Flood is not limited, Mr. Minister.

SHRI MANUBHAI KOTADIA: The main question is about establishment of a regular communication link for advance warning. As the hon. Member is aware, a Private Member's Resolution, which was moved by hon. Member, Shrimati Kamla Sinha, is already under discussion. This was discussed at length on the 10th instant. Thi Resolution is to be taken up again on the 24th of this month. At that time, I intend to reply in detail.

MR. CHAIRMAN: You can reply in short now.

SHRI CHATURANAN MISHRA: Why don't you tell us what, our Prime Minister talked with the Nepalese Prime Minister? Instead of answering that question, you are talking of something else. Why don't you come to the question straight, if not straight to the problem?

श्री सभापति : आपने प्रधान मंत्री से बात की थी?

श्री चतुरानन मिश्र : हमारे प्रधान मंत्री जी ने बातचीत की थी वह क्या थी? कुछ तो कहिये। यह कोई सीक्रेट बात तो है नहीं।

श्री मनुभाई कोटाडिया : प्रधान मंत्री ने प्राइम मिनिस्टर आफ नेपाल से बात की थी। उसमें यह क्वेश्चन भी था डिटेल लेकिन इस के बारे में चर्चा नहीं हुई इसके बारे में फर्दर...

श्री सभापति : डिटेल में बात करने में जा रहे है।

श्री चतुरानन मिश्र : जा रहे है, अच्छी बात है। मैं यह जानना चाहता हूं कि हमारे प्रधान मंत्री ने नेपाल के प्रधान मंत्री से इस पर चर्चा की थी या नहीं। क्योंकि जो कम्यूनिक्यु निकला है उसमें लिखा है कि इन नदियों को बांधने के बारे में या बिजली उद्योग के बारे में दोनों देश बातचीत करेंगे। मैं स्पेसिफिक क्वेश्चन पूछ रहा हूं और यह जनरल में ले जाना चाहते हैं।

श्री मनुभाई कोटाड़िया : जनरल में ले जाने की मेरी कोई कोशिश नहीं है। जैसा मैंने कहा कि हमारे प्रधान मंत्री और नेपाल के प्रधान मंत्री के बीच में इसके बारे में बात हुई थी, फार्मल बात हुई। लेकिन इसमें कुछ तय नहीं किया गया। फार्मल बात यह हुई कि इस बारे में क्या करना चाहिए, कैसे क्या हो सकता है। इसके बारे में बहुत डिटेल में डिसकशन करने की जरूरत है। तो इसके लिए मैंने कहा है कि मैं नेपाल जाकर इस बारे में बातचीत करूंगा।

श्री चतुरानन मिश्र : मेरे और बिन्दुओं पर कोई जवाब नहीं आया। अगर आप भी ऐसा नहीं करेंगे . . .

श्री मनुभाई कोटाड़िया : ऐसा नहीं है।

श्री चतुरानन मिश्र : आपने बांध क्यों नहीं बांधे जो आपने एग्रीमेंट किया था आप इसका जवाब क्यों नहीं दे रहे हैं?

श्री सभापति : आपने नेपाल में बांध क्यों नहीं बनाया? . . . (व्यवधान)

श्री चतुरानन मिश्र : सभापति महोदय, मैं आपकी जानकारी के लिए कहना चाहता हूं कि पिछले महीने में वहां गया था न जाते हैं, न बोलते हैं और न कुछ करते हैं। कुम्भकर्ण की नींद में सो रहे हैं।

श्री मनुभाई कोटाड़िया : कुम्भकर्ण की बात जो कह रहे हैं यह ठीक है कि 40 साल में यह नहीं हुआ। हमारी सरकार को आये आठ महीने हुए हैं। हमने इसको शुरू किया है जो पहले नहीं हुआ था। ऐसा मानकर हम लोग चल रहे हैं। इसलिए मैंने कहा कि इस समय तक जो नहीं हो सका उसको पूरा करने की हमें उम्मीद है, यह मैं कह रहा हूं।

PROF. CHANDRESH P THAKUR: Mr. Chairman, Sir, the problem of floods in North Bihar is a very serious one. The hon. Minister, the way he is answering the question, gives the impression that either he is not aware of what is happening or he is confused or there is a calculated neglect towards the interests of North Bihar.

I would like to have an assurance. The previous Government had assured that there would be a technology mission on flood control for the Ganga Basin, in general, and North Bihar, in particular. Is the present Government standing by this commitment and is it prepared to take concrete steps before the problem gets out of hand?

SHRI MANUBHAI KOTADIA: There is no question of confusion. I have already replied that I am taking this up on a priority basis. I will go to Nepal and I will try my best.

SHRI SHANKAR DAYAL SINGH: The Question Hour is now over. यह चौथा मौका है जब आपने अंतिम समय में इसको पुकारा है (व्यवधान) लेकिन मैं यह जानना चाहता हूं . . . (व्यवधान)

श्री सभापति : क्वेश्चन आवर तो खत्म हो गया, अंतिम समय बहुत दूर है (व्यवधान)

श्री शंकर दयाल सिंह : मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि क्या इस वर्ष कोई बातचीत होगी?

MR. CHAIRMAN: Question Hour is over.

श्री शंकर दयाल सिंह : ओवर जवाब ही बोल दीजिये (व्यवधान)

———